पुणे विश्वविद्यालय

एम.ए. हिंदी पाठ्यक्रम

सत्र (सेमिस्टर) पद्धति

(शैक्षणिक वर्ष : २००८—२००९, २००९—२०१० तथा २०१०—२०११)

प्रस्तुत पाठ्यक्रम की रचना विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली की ''मॉडेल पाठ्यचर्या'' के आलोक में की गई है।

- एम.ए. हिंदी प्रथम सत्र और द्वितीय सत्र के इस पाठ्यक्रम का अध्ययन व अध्यापन एक साथ जून, २००८ से आरंभ होकर मई—जून २०११ तक की परीक्षा के लिए होगा।
- संपूर्ण पाठ्यक्रम का विभाजन चार सत्रों (दो वर्ष) के लिए होगा। विद्यार्थियों को निर्धारित पाठ्यक्रम में से प्रथम सत्र के लिए प्रश्नपत्र १ से ४ तक का और द्वितीय सत्र के लिए प्रश्नपत्र ५ से ८ तक का अध्ययन करना होगा।
- 'संपूर्ण हिंदी' विषय लेने वाले विद्यार्थियों के लिए सामान्य स्तर और विशेष स्तर के प्रश्नपत्रों का अध्ययन करना होगा। गौण विषय के रूप में हिंदी का अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों को प्रथम सत्र में प्रश्नपत्र १ (सामान्य स्तर) और द्वितीय सत्र में प्रश्नपत्र ५ (सामान्य स्तर) का अध्ययन करना होगा।
- प्रश्नपत्र २, ३, ४ और ६, ७, ८ विशेष स्तर के रहेंगे। इनमें से प्रश्नपत्र ४ और प्रश्नपत्र ८ के अंतर्गत ४—४ विकल्प रखे गए हैं। विद्यार्थियों को इनमें से प्रतिसत्र किसी एक ही वैकल्पिक प्रश्नपत्र का चयन करना होगा।
- किसी विशेष विषय में विशेषता प्राप्त करने के लिए प्रश्नपत्र ४ और प्रश्नपत्र ८ के अंतर्गत प्रतिसत्र के लिए ४—४ विकल्प रखे गए हैं।

विद्यार्थी अपने अध्ययन केंद्र में पढ़ाए जानेवाले विकल्पों में से किसी एक ही विकल्प का अध्ययन कर सकता है।

महत्वपूर्ण सूचनाएँ

१. द्वितीय सत्र के अंत में प्रत्येक प्रश्नपत्र के लिए २० अंकों की मौखिक परीक्षा होगी।

२. पुराने पाठ्क्रम के अनुसार जिन छात्रों का एम. ए. हिंदी का एक भाग (भाग १ अथवा भाग २) पूरा हो चुका है वे दूसरा भाग (भाग १ अथवा भाग २) भी पुराने पाठ्यक्रम के अनुसार ही पूरा करेंगे।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य

- छात्रों में साहित्य को समझने, उसका आस्वादन करने तथा मूल्यांकन करने की दृष्टि बढ़ाना।
- हिंदी साहित्य की प्राचीन व आधुनिक गद्य, पद्य विधाओं का तात्विक परिचय कराना।
- साहित्यिक प्रवृतियों के संदर्भ में विभिन्न साहित्य विधाओं के विकासक्रम का परिचय देना।
- साहित्य कृतियों का विविध दृष्टियों से विवेचन—विश्लेषण, आस्वादन तथा समीक्षा करने की दृष्टि देना।
- साहित्यकारों के साहित्यिक व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय कराना तथा साहित्य के लिए उनके योगदान पर प्रकाश डालना।
- प्राचीन एवं आधुनिक भारतीय एवं पाश्चात्य समीक्षा सिद्धांतों और आलोचना प्रणालियों का अध्ययन कराना।
- भाषाविज्ञान, अनुवादविज्ञान, शैलीविज्ञान, सौंदर्यशास्त्र, लोकसाहित्य, दलित साहित्य, प्रयोजनमूलक हिंदी, जनसंचार माध्यम और हिंदी,

भारतीय साहित्य, पत्रकारिता प्रशिक्षण आदि विषयों के अध्ययन के लिए छात्रों को प्रोत्साहन देना।

- हिंदी भाषा की व्यावहारिक उपयोगिता का परिचय देना।
- छात्रों की साहित्य संबंधी अभिरूचि तथा आस्वादन क्षमता में अभिवृद्धि करना।
- छात्रों को जनसंचार एवं इलैक्ट्रानिक मीडिया में हिंदी की उपादेयता तथा सूचना प्रौद्योगिकी के नए क्षेत्र में हिंदी की विकास यात्रा की जानकारी देकर उनमें अभिरूचि निर्माण करना।

पाठ्यक्रम की रूपरेखा

एम. ए. (हिंदी) प्रथम सत्र

प्रश्नपत्र १ : सामान्य स्तर : आधुनिक हिंदी कथा साहित्य
(उपन्यास तथा कहानी)

प्रश्नपत्र २ : विशेष स्तर : प्राचीन तथा मध्ययुगीन काव्य
(विद्यापति तथा जायसी)

प्रश्नपत्र ३ : विशेष स्तर : भारतीय काव्यशास्त्र के सिद्धांत

प्रश्नपत्र ४ : विशेष स्तर : वैकल्पिक

विशेष साहित्यकार

अ) कबीर

आ) तुलसीदास

इ) नाटककार मोहन राकेश

ई) कवि अज्ञेय

एम. ए. (हिंदी) द्‍वितीय सत्र

प्रश्नपत्र ५ : सामान्य स्तर : आधुनिक हिंदी नाटक तथा अन्य विधाएँ

प्रश्नपत्र ६ : विशेष स्तर : मध्ययुगीन हिंदी काव्य (सूरदास, बिहारी, घनानंद)

प्रश्नपत्र ७ : विशेष स्तर : पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धांत तथा आलोचना

प्रश्नपत्र ८ : विशेष स्तर : वैकल्पिक : विशेष विधा तथा अन्य

क) हिंदी उपन्यास

ख) हिंदी नाटक और रंगमंच

ग) प्रयोजनमूलक हिंदी

घ) दलित साहित्य

प्रथम सत्र

प्रश्नपत्र १ : सामान्य स्तर

आधुनिक हिंदी कथा साहित्य

(उपन्यास तथा कहानी)

उद्‌देश्य

१. गद्य की प्रमुख विधाओं के तात्विक स्वरूप का परिचय देना।

२. प्रमुख गद्य विधाओं के विकासक्रम की जानकारी देना।

३. विधा विशेष के तात्विक स्वरूप एवं ऐतिहासिक विकास के परिप्रेक्ष्य में रचना विशेष का महत्व समझने एवं मूल्यांकन करने की क्षमता बढ़ाना।

४. रचना के आस्वादन एवं समीक्षण की क्षमता विकसित करना।

अध्यापन पद्धति

१. व्याख्यान तथा विश्लेषण।

२. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा।

३. दृक्—श्राव्य माध्यमों /साधनों का प्रयोग ।

४. अतिथि विद्वानों के व्याख्यान।

अध्ययनार्थ विषय

१. हिंदी उपन्यास विधा का विकास

२. विवेच्य रचनाकार का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

३. 'विजन' : संवेदना और शिल्प

४. 'विजन' : चरित्र तत्व

५. 'विजन' : संवाद तत्व

६. 'विजन' : देशकाल एवं वातावरण

७. 'विजन' : उद्‌देश्य

८. 'विजन' : शैलीपक्ष

९. 'विजन' : शीर्षक की सार्थकता

१०. हिंदी कहानी विधा का विकास

११. कहानी विधा के तत्व तथा आलोचना:'कालजयी हिंदी कहानी' के संदर्भ में

पाठ्यपुस्तकें

१) उपन्यास : विजन

मैत्रेयी पुष्पा

प्रकाशक : वाणी प्रकाशन, २१/ए,दरियागंज, नई दिल्ली, ११०००२

२) कहानी संकलन : कालजयी हिंदी कहानी

संपा. रेखा सेठी—रेखा उप्रेती

प्रकाशक : अरुणोदय प्रकाशन, २१/ए,दरियागंज, नई दिल्ली, ११०००२

संदर्भ ग्रंथ

१. अठारह उपन्यास : राजेंद्र यादव

२. हिंदी उपन्यास : सौ वर्ष — संपा. रामदरश मिश्र

३. समकालीन हिंदी उपन्यास — डॉ. विवेकी राय

४. उपन्यास : स्थिति और गति — डॉ. चंद्रकांत बांदिवड़ेकर

५. आज का हिंदी उपन्यास — डॉ. इंद्रनाथ मदान

६. प्रेमचंदोत्तर हिंदी उपन्यासों की शिल्पविधि : डॉ. सत्यपाल चुघ

७. नई कहानी का स्वरूप विवेचन — डॉ. इंदु रश्मि

८. नई कहानी के विविध प्रयोग — शशिभूषण पांडेय 'शीतांषु'

९. समकालीन हिंदी कहानी — डॉ. पुष्पपाल सिंह

१०. नई कहानी की भूमिका — कमलेश्वर

११. नई कहानी : संदर्भ और प्रकृति — देवीशंकर अवस्थी

१२. भीष्म साहनी के साहित्य का अनुशीलन : डॉ. सुरेश बाबर (अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर)

१३. उतर शती का हिंदी साहित्य : संपा. डॉ. सुरेशकुमार जैन (अन्नपूर्णा प्रकाशन, इलाहाबाद)

प्रथम सत्र

प्रश्नपत्र २ : विशेष स्तर

प्राचीन तथा मध्ययुगीन हिंदी काव्य

(विद्यापति व जायसी)

उद्देश्य

१. हिंदी का आदिकालीन, भक्तिकालीन तथा रीतिकालीन काव्य प्रवृत्तियों की जानकारी देना।

२. तत्कालीन प्रमुख कवि तथा उनकी कृतियों से परिचय कराना।

३. पाठ्य कृतियों के संदर्भ में समीक्षा की क्षमता बढ़ाना।

अध्यापन पद्धति

१. व्याख्यान तथा विश्लेषण।

२. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा।

३. दृक्–श्राव्य माध्यमों /साधनों का प्रयोग ।

४. अध्ययन यात्रा।

५. अतिथि विशेषज्ञों के व्याख्यान।

अध्ययनार्थ विषय

१. विद्यापति के काव्य में भक्ति–भावना

२. विद्यापति के काव्य में श्रृँगार

३. विद्यापति के काव्य में प्रकृति–चित्रण

४. विद्यापति के काव्य में सौंदर्य–चित्रण

५. विद्यापति के काव्य में गीति–पद्धति

६. विद्यापति के काव्य में काव्य–कला

७. विद्यापति के काव्य में अलंकार–योजना

८. विद्यापति की भाषा

९. विद्यापति के काव्य की देन

१०. विद्यापति : भक्त या शृँगारी कवि

११. विद्यापति के काव्य पर संस्कृत साहित्य का प्रभाव

१२. पद्मावत में प्रेम भाव

१३. पद्मावत में सौंदर्य वर्णन

१४. पद्मावत में विरह वर्ण

१५. पद्मावत में रहस्य भावना एवं दर्शन

१६. पद्मावत में प्रकृति चित्रण

१७. पद्मावत में चरित्र चित्रण

१८. पद्मावत का महाकाव्यत्व

१९. पद्मावत में लोक तत्व

२०. जायसी की काव्यकला

२१. पद्मावत की भाषा तथा अलंकार योजना

पाठ्यपुस्तकें :

१) विद्यापति : आलोचना और संग्रह

संपादक : डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित

प्रकाशक : साहित्य प्रकाशन मंदिर, ग्वालियर

ससंदर्भ व्याख्या के लिए पद :

पद क्रमांक : १, ३, ४, ५, ६, ७, ९, १०, १२, १३, १६, १७, १८, १९, २१, २२, २३, २५, ५८, ५९, ६१, ६४, ६६, ६८, ७४ = २५

२) पद्मावत : मलिक मुहम्मद जायसी

संपादक : वासुदेवशरण अग्रवाल

प्रकाशक : साहित्य सदन, चिरगाँव झाँसी

ससंदर्भ व्याख्या के लिए खंड : १. मानसरोदक खंड

२. नागमति वियोग खंड

संदर्भ ग्रंथ

१. विद्यापति की काव्य प्रतिभा – डॉ. गोविंदराम शर्मा

२. विद्यापति : युग और साहित्य – डॉ. अरविंद नारायण सिन्हा

३. विद्यापति और उनका काव्य – डॉ. शुभकार कपूर

४. विद्यापति – डॉ. शिवप्रसाद सिंह (लोकभारती प्रकाषन, इलाहाबाद)

५. जायसी के पद्‌मावत का मूल्यांकन – प्रो. हरेंद्रप्रताप सिन्हा

६. महाकवि जायसी और उनका काव्य – डॉ. इकबाल अहमद (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)

७. मलिक मुहम्मद जायसी और उनका काव्य – डॉ. शिवसहाय पाठक

८. जायसी का पद्‌मावत काव्य और दर्शन – डॉ. गोविंद त्रिगुणायत

९. पद्‌मावत में काव्य, संस्कृति और दर्शन – डॉ. द्वारिकाप्रसाद सक्सेना

१०. पद्‌मावत का काव्य सौंदर्य – डॉ. चंद्रबली पाण्डेय

प्रथम सत्र

प्रश्नपत्र ३ : विशेष स्तर

भारतीय काव्यशास्त्र के सिद्धांत

उद्देश्य

१. छात्रों को भारतीय साहित्यशास्त्र का परिचय देना।

२. छात्रों को भारतीय साहित्यशास्त्र के विकासक्रम का परिचय देना।

३. छात्रों को भारतीय साहित्यशास्त्र के सिद्धांतों का ज्ञान कराना।

४. छात्रों को भारतीय साहित्यशास्त्र के सिद्धांतों में साम्य, वैषम्य एवं उसके कारणों का ज्ञान कराना।

५. साहित्यशास्त्रीय अध्ययन के माध्यम से छात्रों में समीक्षात्मक दृष्टि विकसित करना।

अध्यापन पद्धति

१. व्याख्यान तथा विश्लेषण।

२. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा।

३. दृक्–श्राव्य माध्यमों /साधनों का प्रयोग ।

४. परिचर्चा।

५. अतिथि विद्वानों के व्याख्यान।

अध्ययनार्थ विषय

१. भारतीय साहित्यशास्त्र के विकासक्रम का संक्षिप्त परिचय ।

२. रस सिद्धांत : रस का स्वरूप, भरतमुनि का रससूत्र, रस के अवयव, रस निष्पत्ति, तत्संबंधी भट्टलोल्लट, शंकुक, भट्टनायक तथा अभिनव गुप्त द्वारा तत्संबंधी व्याख्याओं का विवेचन, साधारणीकरण की अवधारणा।

३. **अलंकार सिद्धांत** : 'अलंकार' शब्द की व्युत्पत्ति, अलंकार की परिभाषा, अलंकार विषयक आचार्यों के मतों का विवेचन, अलंकार सिद्धांत का स्वरूप, अलंकार और अलंकार्य, अलंकार और अलंकारों का मनोवैज्ञानिक आधार, अलंकार और रस, काव्य में अलंकार का स्थान।

४. **रीति सिद्धांत** : 'रीति' शब्द की व्युत्पत्ति, रीति की परिभाषा, रीति के विविध पर्याय, रीतिभेद के आधार, रीतिभेद, रीति और गुण, रीति और शैली

५. **ध्वनि सिद्धांत** : 'ध्वनि' शब्द की व्युत्पत्ति, ध्वनि की परिभाषाएँ, ध्वनि का स्वरूप, ध्वनि और स्फोट सिद्धांत, ध्वनि और शब्दशक्ति, ध्वनि के भेद— अभिधामूला, लक्षणामूला, संलक्ष्यक्रम व्यंग्य ध्वनि, असंलक्ष्यक्रम व्यंग्य ध्वनि, ध्वनि के आधार पर काव्य के भेद, ध्वनि सिद्धांत का महत्व।

६. **वक्रोक्ति सिद्धांत** : 'वक्रोक्ति' की परिभाषा, कुंतकपूर्व वक्रोक्ति विचार, वक्रोक्ति सिद्धांत का स्वरूप, वक्रोक्ति के भेदों का सोदाहरण परिचय, वक्रोक्ति का महत्व।

७. **औचित्य सिद्धांत** : औचित्य का स्वरूप, आचार्य क्षेमेंद्रपूर्व औचित्य विचार, आचार्य क्षेमेंद्र का औचित्य विचार, औचित्य के भेद, अन्य सिद्धांतों के संदर्भ में औचित्य का महत्व।

संदर्भ ग्रंथ

१. भारतीय काव्यशास्त्र (खंड १ और २) : आचार्य बलदेव उपाध्याय

२. रीतिकाव्य की भूमिका : डॉ. नगेंद्र

३. भारतीय काव्यशास्त्र : डॉ. सत्यदेव चौधरी

४. साहित्यशास्त्र के प्रमुख सिद्धांत : डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी

५. काव्यशास्त्र : डॉ. भगीरथ मिश्र

६. भारतीय काव्यशास्त्र के सिद्धांत : डॉ. कृष्णदेव शर्मा

७. समीक्षालोक — डॉ. भगीरथ मिश्र

८. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र का तुलनात्मक अध्ययन : डॉ. बच्चनसिंह

९. पाश्चात्य साहित्यालोचन और हिंदी पर उसका प्रभाव — डॉ. रवींद्रसहाय वर्मा

१०. भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र : डॉ. सुरेशकुमार जैन, प्रा. महावीर कंडारकर (अन्नपूर्णा प्रकाशन कानपुर)

११. भारतीय काव्यशास्त्र की परंपरा— संपा. डॉ. नगेंद्र

१२. भारतीय काव्यशास्त्र — डॉ. विजयपाल सिंह

१३. भारतीय काव्यशास्त्र के प्रतिमान — डॉ. जगदीशप्रसाद कौशिक

प्रथम सत्र

प्रश्नपत्र ४ : विशेष स्तर : वैकल्पिक

(अ) विशेष साहित्यकार : कबीर

उद्‌देश्य

१. छात्रों को तत्कालीन परिस्थितियाँ (दार्शनिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक) के परिप्रेक्ष्य में कबीर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय देते हुए हिंदी को उनके प्रदेय की जानकारी देना।

२. छात्रों को कबीर की काव्यगत शक्ति और सीमाओं से परिचित कराना।

३. छात्रों को कबीर के काव्य की प्रासंगिकता से अवगत कराना।

अध्यापन पद्धति

१. व्याख्यान तथा विश्लेषण।

२. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा।

३. दृक्—श्राव्य माध्यमों /साधनों का प्रयोग।

४. पद प्रस्तुति।

५. अतिथि विद्वानों के व्याख्यान।

अध्ययनार्थ विषय

१. संत काव्य परंपरा और कबीर

२. कबीर की जीवनी और व्यक्तित्व

३. कबीर के धार्मिक विचार

४. कबीर के सामाजिक विचार

५. कबीर का प्रेम तत्व और विरह भावना

६. कबीर का रहस्यवाद।

७. कबीर की दार्शनिकता — ब्रह्म, जीव, माया, जगत्, मोक्ष

८. कबीर की भक्ति और उसकी विशेषताएँ

९. कबीर की उलटबासियाँ और प्रतीक पद्धति

१०. कबीर का कवित्व

११. कबीर काव्य की प्रासंगिकता

१२. कबीर के राम

१३. कबीर का विद्रोह

१४. कबीर की भाषा

पाठ्य ग्रंथ

कबीर ग्रंथावली

संपादक : श्यामसुंदर दास

प्रकाशक : नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी

ससंदर्भ व्याख्या के लिए केवल निम्नलिखित छंद :

१. **गुरूदेव कौ अंग** : ३ ,६, १२, १४, १५, १६, २१, २६, ३३, ३४ = १०

२. **विरह कौ अंग** : ४, ५, ६, ७, ९, ११, १२, १४, १५, १८, २०, २१, २२, २३, २५, २६, ३३, ३५, ४१, ४५ = २०

३. **काल कौ अंग** : १, १३, १४, १५, २० = ०५

४. **विद्या कौ अंग** : २, ३, ४, ६, ८, ९, १० = ०७

५. **पद** : १, ८, ११, १६, ४०, ४३, ५५, ५९, ९२, १११, ११७, १५६, १८०, १८६, १९८, २५०, २५१, २७४, २९०, ३२९, ३३१, ३३२, ३३८, ३४६, ३९४, ४००, ४०२ = २७

संदर्भ ग्रंथ

१. कबीर : हजारीप्रसाद द्विवेदी

२. कबीर : संपा. विजयेंद्र स्नातक

३. कबीर की विचारधारा : डॉ. गोविंद त्रिगुणायत

४. कबीर साहित्य की परंपरा : आ. परशुराम चतुर्वेदी

५. कबीर चिंतन और सर्जन : संपा. आनंदप्रकाश दीक्षित

६. कबीर : एक विवेचन – डॉ. सरनामसिंह शर्मा 'अरुण'

७. नाथ और संत साहित्य : डॉ. नागेंद्रनाथ उपाध्याय

८. हिंदी संतों की उलटबासी साहित्य : डॉ. रमेशचंद्र मिश्रा

९. निर्गुण कवियों का सामाजिक आदर्श : विमल मेहता

१०. कबीर साधना और साहित्य : डॉ. प्रतापसिंह चौहान

११. कबीर एक अनुशीलन : डॉ. रामकुमार वर्मा

१२. कबीर का रहस्यवाद – डॉ. रामकुमार वर्मा

१३. युग पुरुष कबीर – रामचंद्र वर्मा

१४. कबीर चिंतन – डॉ. ब्रजभूषण शर्मा

१५. कबीर : डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी का प्रक्षिप्त चिंतन – डॉ. धर्मवीर भारती

१६. कबीर के आलोचक – डॉ. धर्मवीर

प्रथम सत्र

प्रश्नपत्र ४ : विशेष स्तर : वैकल्पिक

(आ) विशेष साहित्यकार : तुलसीदास

उद्देश्य

१. छात्रों को तत्कालीन परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में तुलसीदास के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय देते हुए हिंदी को उनके प्रदेय की जानकारी देना।

२. छात्रों को तुलसीदास की काव्य—कला से परिचित कराना।

३. छात्रों को तुलसीदास के काव्य की प्रासंगिकता से अवगत कराना।

अध्यापन पद्धति

१. व्याख्यान तथा विश्लेषण।

२. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा।

३. दृक्—श्राव्य माध्यमों /साधनों का प्रयोग।

४. परिचर्चा।

५. अतिथि विद्वानों के व्याख्यान।

अध्ययनार्थ विषय

१. तुलसीदास का जीवनवृत्त एवं कृतित्व।

२. तुलसी की भक्ति पद्धति।

३. तुलसी के दार्शनिक विचार।

४. मानस का महाकाव्यत्व।

५. तुलसी का राज्यादर्श।

६. मानस में लोक—जीवन एवं संस्कृति

७. तुलसी का लोकनायकत्व।

८. तुलसीदास का हिंदी साहित्य में स्थान।

९. विनयपत्रिका का प्रयोजन।

१०. विनयपत्रिका का वर्ण्य विषय।

११. विनयपत्रिका में कला—पक्ष।

१२. विनयपत्रिका में भक्ति।

१३. विनयपत्रिका में दैन्य—भाव।

१४. विनयपत्रिका में तुलसी का मन को उद्बोधन।

१५. विनयपत्रिका में गीति—तत्व।

पाठ्यग्रंथ

(१) श्रीरामचरितमानस

प्रकाशक : गीता प्रेस, गोरखपुर, २७३००५

पाठ्यक्रम

उत्तरकांड : पृष्ठ संख्या ७३१ से ८८० तक (दोहा क्रमांक १ से ५२ तक)

(२) विनयपत्रिका

संपादक : वियोगी हरि

प्रकाशक : गीता प्रेस, गोरखपुर, २७३००५

पाठ्यक्रम

केवल निम्नलिखित पद

पद क्रमांक : १, ८, ३०, ४५, ६६, ७२, ७९, ८५, ९०, १०१, १२६, १५४, १६०, १६७, १७४, १८९, १९२, २१२, २३५, २५४ = २०

संदर्भ ग्रंथ

१. तुलसी काव्य मीमांसा : डॉ. उदयभानुसिंह

२. तुलसी दर्शन मीमांसा : डॉ. उदयभानुसिंह

३. तुलसी और उनका काव्य : डॉ. उदयभानुसिंह

४. तुलसीदास और उनका काव्य : रामनरेश त्रिपाठी

५. तुलसीदास और उनका युग : राजपति दीक्षित

६. तुलसी साहित्य के बदलते प्रतिमान : चंद्रभानु रावत

७. विश्वकवि तुलसी और उनका काव्य : डॉ. रामप्रसाद मिश्र

८. तुलसी की साहित्य साधना : डॉ. लल्लन राय

९. तुलसीदास : वस्तु और शिल्प — डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित

१०. तुलसी साहित्य में नीति, भक्ति और दर्शन : डॉ. हरिश्चंद्र वर्मा

११. तुलसी साहित्य : विवेचन और मूल्यांकन—डॉ.देवेंद्रनाथ शर्मा, डॉ. वचनदेव कुमार

१२. तुलसी काव्य का सांस्कृतिक अध्ययन : डॉ. जितेंद्रनाथ पाण्डेय

१३. तुलसीदास : जीवनी और विचारधारा — डॉ. राजाराम रस्तोगी

१४. तुलसी दर्शन : डॉ. बलदेवप्रसाद मिश्र

१५. तुलसीदास : संपा. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

१६. महाकवि तुलसीदास और युग संदर्भ : डॉ. भगीरथ मिश्र

१७. गोस्वामी तुलसीदास : डॉ. अशोक कामत

१८. तुलसी का काव्य सौंदर्य : डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी

१९. तुलसी साहित्य की भूमिका : रामरतन भटनागर

२०. तुलसीदास : चिंतन और कला — संपा. डॉ. इंद्रनाथ मदान

२१. रामचरितमानस : अयोध्याकांड — डॉ. योगेंद्रप्रताप सिंह

२२. तुलसी का मानस : मुंशीराम शर्मा

२३. रामचरितमानस में भक्ति : डॉ. सत्यनारायण शर्मा

२४. तुलसी वाङ्मय विमर्श : डॉ. कुंदनलाल जैन
२५. मानस चरित्र कोश : डॉ. भ. ए. राजूरकर
२६. तुलसी के भक्त्यात्मक गीत : डॉ. वचननदेव कुमार
२७. विनयपत्रिका : एक मूल्यांकन — डॉ. हरिचरण शर्मा
२८. विनयपत्रिका : दार्शनिक तथा कलात्मक विवेचन — डॉ. राजकुमार अवस्थी
२९. तुलसी संदर्भ : डॉ. नगेंद्र
३०. गोस्वामी तुलसीदास : आ. रामचंद्र शुक्ल
३१. हिंदी के प्राचीन प्रतिनिधि कवि : द्वारिकाप्रसाद सक्सेना

प्रथम सत्र

प्रश्नपत्र ४ : विशेष स्तर : वैकल्पिक

(इ) विशेष साहित्यकार : नाटककार मोहन राकेश

उद्‌देश्य

१. हिंदी नाट्‌य साहित्य के विकासक्रम की जानकारी देना।

२. भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टि से नाटक के स्वरूप एव तत्वों का परिचय देना।

३. छात्रों को मोहन राकेश के नाट्‌य—संसार से परिचित कराना।

४. छात्रों को मोहन राकेश की नाट्‌य कला का परिचय देना।

५. हिंदी तथा भारतीय नाट्‌यक्षेत्र में मोहन राकेश के योगदान से छात्रों को परिचित कराना।

अध्यापन पद्धति

१. व्याख्यान तथा विश्लेषण।

२. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा।

३. दृक्—श्राव्य माध्यमों/साधनों का प्रयोग।

४. परिचर्चा।

५. अतिथि विद्वानों के व्याख्यान।

अध्ययनार्थ विषय

१. भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टि से नाटक का स्वरूप एवं तत्वों का परिचय।

२. मोहन राकेश का व्यक्तित्व और कृतित्व।

३. हिंदी नाट्‌य परंपरा का सामान्य परिचय—स्वातंत्र्योत्तर नाटक।

४. मोहन राकेश के नाट्‌य साहित्य का तात्विक एवं प्रस्तुतीकरण परिचय।

५. मोहन राकेश का नाट्‌य चिंतन।

६. मोहन राकेश की नाट्यकला : कथ्य —आधुनिक संवेदना, चरित्रांकन, भाषा—संवाद योजना, मंचीयता।

७. हिंदी और भारतीय नाट्यक्षेत्र में मोहन राकेश का योगदान।

अध्ययनार्थ नाटक

१. आषाढ का एक दिन

२. लहरों के राजहंस

३. आधे अधूरे

संदर्भ ग्रंथ सूची

१. नाट्यकला—रघुवंश

२. रंगदर्शन—नेमिचंद्र जैन

३. रंगमंच—कुँवरजी अग्रवाल

४. नाटक की साहित्यिक संरचना—गोविंद चातक

५. नई रंग—चेतना और हिंदी नाटककार—डॉ. जयदेव तनेजा

६. आधुनिक हिंदी नाटक और रंगमंच—नेमिचंद्र जैन

७. आधुनिक हिंदी नाटक का मसीहा : मोहन राकेश—गोविंद चातक

८. मोहन राकेश का नाट्यशिल्प : प्रेरणा एवं प्रेरणस्रोत—डॉ. राजेश्वर प्रसाद सिंह

९. मोहन राकेश और उनके नाटक—गिरीश रस्तोगी

१०. लहरों के राजहंस : विविध आयाम—जयदेव तनेता

११. नाटककार मोहन राकेश—सुंदरलाल कथूरिया

१२. आधुनिक भारतीय रंग परिदृश्य—डॉ. जयदेव तनेजा

१३. मोहन राकेश : रंगशिल्प और प्रदर्शन—डॉ. जयदेव तनेजा

१४. समसामयिक हिंदी नाटकों में खंडित व्यक्तित्व अंकन : डॉ. टी. आर. पाटील

१५. आधुनिक हिंदी नाटककारों के नाट्य सिद्धांत—डॉ. निर्मला हेमंत

१६. मेरा हमदम मेरा दोस्त—संपा कमलेश्वर

प्रथम सत्र

प्रश्नपत्र ४ : विशेष स्तर : वैकल्पिक

(ई) विशेष साहित्यकार : कवि अज्ञेय

उद्देश्य

१. विशेष साहित्यकार के रूप में कवि अज्ञेय के साहित्यिक व्यक्तित्व का परिचय देना।

२. युगीन पृष्ठभूमि के परिप्रेक्ष्य में अज्ञेय की काव्यकृतियों का परिचय देना।

३. निर्धारित प्रमुख रचनाओं के सूक्ष्म अध्ययन तथा अन्य कृतियों के सामान्य अध्ययन के माध्यम से कवि अज्ञेय की काव्यकला से परिचित कराना।

४. कवि अज्ञेय की निर्धारित रचनाओं के आस्वादन एवं मूल्यांकन की दृष्टि देना।

५. कवि के रूप में अज्ञेय के योगदान से परिचित कराना।

अध्यापन पद्धति

१. व्याख्यान तथा विश्लेषण।

२. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा।

३. दृक्—श्राव्य माध्यमों/साधनों का प्रयोग।

४. परिचर्चा।

५. अतिथि विद्वानों के व्याख्यान।

अध्ययनार्थ विषय

१. नई कविता और अज्ञेय

२. अज्ञेय : जीवनवृत्त एवं कृतित्त

३. अज्ञेय के काव्य में प्रकृति—चित्रण

४. अज्ञेय की काव्य प्रवृत्तियाँ

५. अज्ञेय के काव्य प्रेमभाव

६. अज्ञेय का अभिव्यक्ति पक्ष

७. अज्ञेय का काव्य—सौष्ठव

८. अज्ञेय के काव्य में आस्था एवं विश्वास

९. अज्ञेय के काव्य में दार्शनिकत

१०. अज्ञेय के काव्य में प्रकृति एवं प्रेस

११. अज्ञेय के काव्य की भावगत—विशेषताएँ

१२. अज्ञेय के काव्य की कलागत प्रवृत्तियाँ

अध्ययनार्थ निर्धारित कृतियाँ

१) हरी घास पर क्षण भर

प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन,दिल्ली

केवल निम्नलिखित कविताएँ

१. कितनी शांति। कितनी शांति

२. पराजय है याद

३. दुर्वांचल

४. अकेली न जैयो राधे जमुना के तीर

५. कतकी पूनो

६. सपने मैंने भी देखे हैं

७. माहीवाल से

८. क्वाँर की बयार

९. पहला दौंगरा

१०. कलगी बाजरे की

११. हरी घास पर क्षण—भर

१२. नदी के द्वीप

२) बावरा अहेरी

प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली

केवल निम्नलिखित कविताएँ

१. आज तुम शब्द न दो

२. बावरा अहेरी

३. वसंत गीत

४. शोषक—भैया

५. नख—शिख

६. काँगडे की छोरियाँ

७. वहाँ रात

८. चाँदनी जी लो

९. यह दीप अकेला

१०. जो कहा नहीं गया

३) कितनी नावों में कितनी बार

प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली

केवल निम्नलिखित कविताएँ

१. कितनी नावों में कितनी बार

२. समय क्षण भर थमा

३. ओ निस्संग ममेतर

४. कि हम नहीं रहेंगे

५. गुल—लाल

६. अंधकार में जागनेवाले

७. युद्ध—विराम

८. स्मारक

९. काँच के पीछे मछलियाँ

१०. मन बहुत सोचता है।

संदर्भ ग्रंथ

१. तार सप्तक – संपा. अज्ञेय

२. दूसरा सप्तक – संपा. अज्ञेय

३. नई कविता की भूमिका – श्री अंजनीकुमार

४. नई कविता का वैचारिक प्ररिप्रेक्ष्य – डॉ. जीवनप्रकाश जोशी

५. नई कविता की मानक कृतियाँ – डॉ. जीवनप्रकाश जोशी

६. कविता के नए प्रतिमान – डॉ. नामवरसिंह

७. नई कविता: संस्कार और शिल्प – डॉ. रमाशंकर मिश्र

८. आधुनिक काव्य – डॉ. राजपाल शर्मा

९. आधुनिक काव्य – डॉ. संतोषकुमार तिवारी

१०. नई कविता, नए कवि–डॉ. विश्वंभर मानव

११. प्रयोगवाद और अज्ञेय–डॉ. शैल सिनहा

१२. अज्ञेय का काव्य : एक पुनर्मूल्यांकन–डॉ. शंभुनाथ चतुर्वेदी

१३. अज्ञेय की काव्य : एक विश्लेषण–डॉ. दुर्गाशंकर मिश्र

१४. अज्ञेय की कविता–डॉ. चंद्रकांत बांदिवडेकर

१५. अज्ञेय की काव्य–चेतना–डॉ. कृष्ण भावुक

१६. अज्ञेय : एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन–डॉ. ज्वालाप्रसाद खेतान

१७. अज्ञेय काव्य की भाषा–संरचना का अध्ययन–डॉ. निर्मला शर्मा

१८. अज्ञेय काव्य का सौंदर्यशास्त्रीय अध्ययन–डॉ. फुलवंत कौर

१९. कवि अज्ञेय: विश्लेषण और मूल्यांकन–डॉ. ब्राजमोहन शर्मा

२०. अज्ञेय : कवि और काव्य–राजेंद्र प्रसाद

२१. अज्ञेय–डॉ. विद्यानिवास मिश्र

२२. अज्ञेय–विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

२३. अज्ञेय का काव्य–सुमन झा

२४. शिखर से सागर तक (अज्ञेय की जीवन–यात्रा) डॉ. राजकमल राय

२५. सदानीरा (खंड १ / २)–संपा. अज्ञेय

द्वितीय सत्र

प्रश्नपत्र ५ : सामान्य स्तर

आधुनिक हिंदी नाटक तथा अन्य विधाएँ

(नाटक, निबंध तथा यात्रा साहित्य)

उद्‌देश्य

१. गद्य की प्रमुख विधाओं के तात्विक स्वरूप का परिचय देना।

२. प्रमुख गद्य विधाओं के विकासक्रम की जानकारी देना।

३. विधा विशेष के तात्विक स्वरूप एवं ऐतिहासिक विकास के परिप्रेक्ष्य में रचना विशेष का महत्व समझने एवं मूल्यांकन करने की क्षमता बढ़ाना।

४. रचना के आस्वादन एवं समीक्षण की क्षमता विकसित करना।

अध्यापन पद्धति

१. व्याख्यान तथा विश्लेषण।

२. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा।

३. दृक्–श्राव्य माध्यमों /साधनों का प्रयोग ।

४. अतिथि विद्वानों के व्याख्यान।

अध्ययनार्थ विषय

१. हिंदी नाटक, निबंध तथा यात्रा–साहित्य विधाओं का विकास।

२. 'कोर्ट मार्शल' नाटक के शिल्पगत संरचना का परिचय।

३. आचार्य हजारीप्रसाद द्‌विवेदी के निबंधों की विशेषताएँ।

४. आचार्य हजारीप्रसाद द्‌विवेदी के निबंधों में विचारात्मकता।

५. आचार्य हजारीप्रसाद द्‌विवेदी के निबंधों की शैली।

६. यात्रा साहित्य में लेखक की घुमक्कडी प्रवृत्ति।

७. यात्रा साहित्य में प्रकृति चित्रण।

८. यात्रा साहित्य में सौंदर्य बोध तथा यथार्थ बोध।

९. यात्रा साहित्य में देश, काल एवं वातावरण।

१०. यात्रा साहित्य में लेखक का उद्देश्य।

११. यात्रा साहित्यकार की भाषाशैली।

पाठ्यग्रंथ

१) नाटक : कोर्ट मार्शल — स्वदेश दीपक

प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., १/बी, नेताजी सुभाश मार्ग, नई दिल्ली — ११०००२

४) निबंध : हजारीप्रसाद द्विवेदी के चुने हुए निबंध

संपादक : मुकुंद द्विवेदी

प्रकाशक : किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली

केवल निम्नलिखित निबंध

१. अशोक के फूल

२. देवदारू

३. आम फिर बौरा गए

४. नाखून क्यों बढ़ते हैं

५. ठाकुर जी की बटोर

६. मेरी जन्मभूमि

७. घर जोड़ने की माया

८. हिमालय

९. अंधकार से जूझना है

१०. साहित्य की संप्रेषणीयता

५) हिंदी यात्रा साहित्य :

संपादक : डॉ. तुकाराम पाटील तथा डॉ. नीला बोर्वणकर

प्रकाशक : जगत् भारती प्रकाशन, ३२२, नई बस्ती, कीटगॉव, इलाहाबाद, २११००३

संदर्भ ग्रंथ

१. हिंदी रंगकर्म : दशा और दिशा — डॉ. जयदेव तनेजा

२. समकालीन हिंदी नाटक और रंगमंच — डॉ. जयदेव तनेजा

३. समसामयिक हिंदी नाटकों में खंडित व्यक्तित्व अंकन — डॉ. टी. आर. पाटील

४. आधुनिक हिंदी नाटकों में प्रयोगधर्मिता — डॉ. सत्यवती त्रिपाठी

५. हिंदी नाटक : आज—कल — डॉ. जयदेव तनेजा

६. सातवें दशक के प्रतीकात्मक नाटक — रमेश गौतम

७. युगबोध और हिंदी नाटक — डॉ. सरिता वशिष्ठ

८. नव्य हिंदी नाटक — डॉ. सावित्री स्वरूप

९. हिंदी के प्रतिनिधि निबंधकार — डॉ. द्वारिकाप्रसाद सक्सेना

१०. हिंदी साहित्य में निबंध और निबंधकार — डॉ. गंगाप्रसाद गुप्त

११. हिंदी के प्रमुख निबंधकार : रचना और शिल्प — डॉ. गणेश खरे

१२. हिंदी निबंध और निबंधकार — डॉ. ठाकुर प्रसाद सिंह

१३. उतर शती का हिंदी साहित्य : संपा. डॉ. सुरेशकुमार जैन (अन्नपूर्णा प्रकाशन, इलाहाबाद)

प्रश्नपत्र ६ : विशेष स्तर

मध्ययुगीन हिंदी काव्य

(सूरदास, बिहारी तथा घनानंद)

उद्देश्य

१. हिंदी का आदिकालीन, भक्तिकालीन तथा रीतिकालीन काव्य प्रवृत्तियों की जानकारी देना।

२. तत्कालीन प्रमुख कवि तथा उनकी कृतियों से परिचय कराना।

३. पाठ्य कृतियों के संदर्भ में समीक्षा की क्षमता बढ़ाना।

अध्यापन पद्धति

१. व्याख्यान तथा विश्लेषण।

२. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा।

३. दृक्–श्राव्य माध्यमों /साधनों का प्रयोग ।

४. अध्ययन यात्रा।

५. अतिथि विशेषज्ञों के व्याख्यान।

अध्ययनार्थ कवि

१) सूरदास

२) बिहारी

३) घनानंद

अध्ययनार्थ विषय

१. भ्रमरगीत की दार्शनिक पृष्ठभूमि

२. सूरदास के काव्य में योग बनाम भक्ति

३. सूरदास के काव्य में वियोग वर्णन

४. भ्रमरगीत : एक उपालंभ काव्य

५. सूर की गोपियाँ

६. सूर के उद्धव

७. सूर की काव्य कला

८. सूर की भाषा

९. सूर का वागवैदग्ध्य

१०. भ्रमरगीत में व्यंजना

११. रीतिसिद्ध कवि बिहारी

१२. बिहारी का संयोग वियोग निरूपण

१३. बिहारी का सौंदर्य चित्रण

१४. बिहारी की बहुज्ञता

१५. बिहारी का शृँगारेतर काव्य

१६. बिहारी का काव्य सौंदर्य

१७. बिहारी की अलंकार योजना

१८. बिहारी की भाषा शैली

१९. सतसई परंपरा में बिहारी का स्थान

२०. घनानंद : रीतिकालीन स्वच्छन्द काव्यधारा के कवि

२१. घनानंद की प्रेम व्यंजन : संयोग पक्ष

२२. घनानंद की विरहानुभूति

२३. घनानंद का काव्य शिल्प

२४. घनानंद का सौंदर्य चित्रण

२५. घनानंद के काव्य में अलंकार योजना

२६. घनानंद की काव्य भाषा

२७. घनानंद और बिहारी की तुलना

२८. रीतिकालीन काव्य में घनानंद का स्थान

पाठ्य पुस्तकें

१) सूरदास : भ्रमरगीत सार

संपादक : आचार्य रामचंद्र शुक्ल

प्रकाशक : श्री गोपालदास पोरवाल, साहित्य सेवा सदन, वाराणसी १

ससंदर्भ व्याख्या के लिए पद :

पद क्रमांक : १, ५, ६, ७, ८, १२, १३, १५, १६, १८, २०, २४, २५, ३१, ३४, ३९, ४०, ४२, ४४, ४५, ४८, ५७, ६४, ७५, ८६, ८९, ९३, ९४, १०१, १०२, १०५, १०७, १०८, १११, १२२, १३४, १३५, १३६, १३८, १५४ = ४०

२) रीति काव्य धारा :

संपादक : डॉ. रामचंद्र तिवारी / डॉ. रामफेर त्रिपाठी

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

ससंदर्भ व्याख्या के लिए छंद :

बिहारी तथा घनानंद के संपूर्ण छंद

संदर्भ ग्रंथ

१. सूरदास और उनका साहित्य : डॉ. मुंशीराम शर्मा
२. भारतीय साधना और सूर साहित्य – डॉ. हरवंशलाल शर्मा
३. सूर की काव्य कला – डॉ. मनमोहन गौतम
४. सूर साहित्य – डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी
१. सूर की भाषा – डॉ. प्रेमनारायण टंडन
२. कृष्णकाव्य और सूर : सांस्कृतिक संदर्भ – डॉ. प्रेमशंकर
३. सूरदास – आ. रामचंद्र शुक्ल
४. सूरदास : एक पुनरावलोकन – डॉ. ओम प्रकाश शर्मा (निराली प्रकाशन, पुणे)
५. महाकवि सूरदास – डॉ. आ. नंददुलारे वाजपेयी
६. भ्रमरगीत का काव्य सौंदर्य – डॉ. सत्येंद्र पारीक
७. भ्रमरगीत : एक अन्वेषण – डॉ. सत्येंद्र
८. सूर की गोपिका : एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन– डॉ. प्रभारानी भाटिया
९. सूरदास – डॉ. ब्रजेश्वर वर्मा (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
१०. बिहारी का तुलनात्मक अध्ययन – पं. पद्मसिंह शर्मा (ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली)
११. बिहारी और उनका साहित्य – डॉ. हरवंशलाल शर्मा / डॉ. परमानंद शास्त्री (भारत प्रकाशन मंदिर, अलीगढ़)
१२. बिहारी काव्य का मूल्यांकन – किशोरी लाल (साहित्य भवन प्रा. लि. इलाहाबाद)
१३. षट्कवि : विवेचनात्मक अध्ययन – डॉ. ओमप्रकाश शर्मा (निराली प्रकाशन, पुणे)
१४. सूर की मौलिकता – डॉ. वेदप्रकाश शास्त्री (सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली)
१५. महाकवि विद्यापति – डॉ. कृष्णानंद पीयूष
१६. हिंदी के प्राचीन कवि – डॉ. दयानंद शर्मा
१७. रीतिकालीन काव्य पर संस्कृत काव्य का प्रभाव – डॉ. दयानंद शर्मा

द्वितीय सत्र

प्रश्नपत्र ७ : विशेष स्तर

पाश्चात्य साहित्यशास्त्र के सिद्धांत तथा आलोचना

उद्देश्य

१. छात्रों को पाश्चात्य साहित्यशास्त्र का परिचय देना।

२. छात्रों को पाश्चात्य साहित्यशास्त्र के विकासक्रम का परिचय देना।

३. छात्रों को पाश्चात्य साहित्यशास्त्र के सिद्धांतों का ज्ञान कराना।

४. छात्रों को पाश्चात्य साहित्यशास्त्र के सिद्धांतों में साम्य, वैषम्य एवं उसके कारणों का ज्ञान कराना।

५. छात्रों को नई समीक्षा के सिद्धांतों का ज्ञान कराना।

६. छात्रों को आलोचना की विविध प्रणालियों तथा नई अवधारणाओं का परिचय देना।

७. साहित्यशास्त्रीय अध्ययन के माध्यम से छात्रों में समीक्षात्मक दृष्टि विकसित करना।

अध्यापन पद्धति

१. व्याख्यान तथा विश्लेषण।

२. संगोश्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा।

३. दृक्—श्राव्य माध्यमों /साधनों का प्रयोग ।

४. परिचर्चा।

५. अतिथि विद्वानों के व्याख्यान।

अध्ययनार्थ विषय

२. पाश्चात्य साहित्यशास्त्र के विकासक्रम का संक्षिप्त परिचय।

३. प्लेटो : काव्य सिद्धांत, अनुकरण सिद्धांत

४. अरस्तू के काव्य सिद्धांत :

क) **अनुकरण सिद्धांत** : अनुकरण की व्याख्या, प्लेटो और अरस्तू की अनुकरण विषयक धारणा, दोनों के अनुकरण विषयक विचारों की तुलना।

ख) **विरेचन सिद्धांत** : स्वरूप विवेचन तथा व्याख्याएँ, विरेचन का महत्व, त्रासदी विवेचन।

५. **उदात्त सिद्धांत** : लोंजाइनस द्वारा उदात्त की व्याख्या, उदात्त के अंतरंग, तथा बहिरंग तत्व, काव्य में उदात्त का महत्व, लोंजाइनस का योगदान।

६. **आई. ए. रिचर्डस् का मनोवैज्ञानिक मूल्यवाद और संप्रेषण सिद्धांत** : काव्य मूल्यों की मनोवैज्ञानिक व्याख्या, संप्रेषण सिद्धांत की परिभाषा और स्वरूप, संप्रेषण सिद्धांत का महत्व, आई. ए. रिचर्डस् का योगदान।

७. **इलियट का निर्वैयक्तिकता सिद्धांत और वस्तुनिष्ठ प्रतिरूपता सिद्धांत** : इलियट की निर्वैयक्तिकता संबंधी धारणा, वस्तुनिष्ठ प्रतिरूपता सिद्धांत का स्वरूप, इलियट का योगदान।

८. **क्रोचे का अभिव्यंजनावाद** : स्वरूप विवेचन, कला के साथ का संबंध, अभिव्यंजनावाद और वक्रोक्ति सिद्धांत।

९. **प्रतीकवाद** : स्वरूप विवेचन एवं व्याख्या, वर्गीकरण, महत्व एवं सीमाएँ।

१०. **बिंबवाद** : स्वरूप विवेचन एवं व्याख्या, वर्गीकरण, काव्य में महत्व।

११. **समीक्षा की विशिष्ट प्रवृत्तियाँ** : संरचनावाद, विखंडनवाद, उत्तर आधुनिकता।

१२. **आलोचना** : आलोचना का स्वरूप और उद्देश्य, आलोचक के गुण, हिंदी आलोचना की विभिन्न प्रणालियाँ – सैद्धांतिक, मनोवैज्ञानिक, शैली वैज्ञानिक समाजशास्त्रीय, ऐतिहासिक, तुलनात्मक, प्रभाववादी, स्त्रीवादी तथा सौंदर्यशास्त्रीय आलोचना।

संदर्भ ग्रंथ

१. अरस्तू का काव्यशास्त्र – डॉ. नगेंद्र

२. समीक्षालोक – डॉ. भगीरथ मिश्र

३. पाश्चात्य काव्यशास्त्र : इतिहास, सिद्धांत और वाद

४. पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धांत – डॉ. कृष्णदेव शर्मा

५. पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धांत – डॉ. शांतिस्वरूप गुप्त

६. पाश्चात्य काव्यशास्त्र – डॉ. देवेंद्रनाथ शर्मा

७. पाश्चात्य काव्यशास्त्र : अधुनातम संदर्भ – डॉ. सत्यदेव मिश्र

८. पाश्चात्य साहित्य सिद्धांत विवेचन – डॉ. ओमप्रकाश शर्मा

९. आलोचना के आधुनिकतावाद और नई समीक्षा – डॉ. शिवकरण सिंह

१०. उत्तर आधुनिकता और उत्तर संरचनावाद – सुधीश पचौरी

११. उत्तर आधुनिक साहित्यिक विमर्श – सुधीश पचौरी

१२. उत्तर आधुनिकता : कुछ विचार, संपा. देवीशंकर नवीन, सुशांतकुमार मिश्र

१३. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र का तुलनात्मक अध्ययन : डॉ. बच्चनसिंह

१४. पाश्चात्य साहित्यालोचन और हिंदी पर उसका प्रभाव – डॉ. रवींद्रसहाय वर्मा

१५. हिंदी आलोचना : उद्‌भव और विकास : डॉ. भगवत्स्वरूप मिश्र

१६. आधुनिक समीक्षा : डॉ. भगवत्स्वरूप मिश्र

१७. तुलनात्मक साहित्यशास्त्र – डॉ. विष्णुदत्त राकेश

१८. हिंदी आलोचना के नए वैचारिक सरोकार – डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल

१९. भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र : डॉ. सुरेशकुमार जैन, प्रा. महावीर कंडारकर (अन्नपूर्णा प्रकाशन कानपुर)

२०. पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धांत – डॉ. मैथिलीप्रसाद भारद्वाज

द्वितीय सत्र

प्रश्नपत्र ८ : विशेष स्तर : वैकल्पिक

विशेष विधा तथा अन्य

(क) हिंदी उपन्यास

उद्देश्य

१. उपन्यास विधा के तात्विक स्वरूप की जानकारी देना।

२. उपन्यास तथा अन्य साहित्यिक विधाओं का तुलनात्मक परिचय देना।

३. हिंदी उपन्यासों के विकासक्रम की जानकारी देना।

४. हिंदी उपन्यासों की विभिन्न प्रवृत्तियों से परिचित कराना।

५. हिंदी उपन्यासों के तात्विक स्वरूप एवं विकासक्रम के परिप्रेक्ष्य में उपन्यासों के आस्वादन, अध्ययन एवं मूल्यांकन की क्षमता बढ़ाना।

अध्यापन पद्धति

१. व्याख्यान तथा विश्लेषण।

२. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा।

३. दृक्–श्राव्य माध्यमों/साधनों का प्रयोग।

४. परिचर्चा।

५. अतिथि विद्वानों के व्याख्यान।

विशेष अध्ययन के लिए उपन्यास

१) गोदान : प्रेमचंद

प्रकाशक : सरस्वती प्रेस, २/४३, अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली–२

२) मैला आँचल : फणीश्वरनाथ 'रेणु'

प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. १ बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली २.

३) राग दरबारी : श्रीलाल शुक्ल

प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. १बी. नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली

४) एक पत्नी के नोटस् : ममता कालिया

प्रकाशक : किताबघर प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली—२

अध्ययनार्थ विषय :

१. उपन्यास की परिभाषा, स्वरूप, उपन्यास के तत्व, शिल्पविधान, उपन्यास तथा कहानी, उपन्यास तथा महाकाव्य, उपन्यास तथा जीवनी।

२. हिंदी उपन्यास का विकास—प्रेमचंदपूर्व, प्रेमचंदकालीन और प्रेमचंदोत्तर (सन. १९६० तक) तथा साठोत्तर हिंदी उपन्यास।

३. हिंदी उपन्यासों की प्रवृत्तियाँ—जासूसी, तिलस्मी, सामाजिक, राजनितिक, आँचलिक, मनोवैज्ञानिक, ऐसिहासिक, जीवनीपरक।

४. उपन्यास की विविध शैलियाँ—वर्णनात्मक, आत्मकथानात्मक, पत्र शैली, डायरी शैली, पूर्वदीप्ति, चेतनाप्रवाह, मिश्र शैली।

५. 'गोदान', 'मैला आँचल', 'रागदरबारी' तथा 'एक पत्नी के नोटस्' उपन्यासों का विशेष अध्ययन।

संदर्भ ग्रंथ

१. हिंदी उपन्यास: उद्‌भव और विकास—सुरेश सिंहा

२. हिंदी उपन्यास—रामदरश मिश्र

३. उपन्यास का शिल्प—गोपाल राय

४. हिंदी उपन्यास: शिल्प और प्रयोग—डॉ. त्रिभुवन सिंह

५. हिंदी उपन्यास: एक सर्वेक्षण—महेंद्र चतुर्वेदी

६. हिंदी उपन्यास: शिवनारायण श्रीवास्तव

७. हिंदी उपन्यास: सामाजिक चेतना—डॉ. कुँवरपाल सिंह

८. हिंदी उपन्यास: औ यथार्थवाद—डॉ. त्रिभुवन सिंह

९. हिंदी उपन्यास: सृजन और सिद्‌धांत—नरेंद्र कोहली

१०. उपन्यास : स्थिति और गति—डॉ. चंद्रकांत बांदिवड़ेकर

११. हिंदी उपन्यास की दिशाएँ—डॉ. वेदप्रकाश अभिताभ

१२. हिंदी उपन्यास की शिल्पविधि का विकास—प्रेमबिहारिलला भटनागर

१३. प्रेमचंदोत्तर उपन्यासों की शिल्पविधि—डॉ. सत्यपाल चुघ

१४. प्रेमचंद : एक सिंहावलोकन—डॉ. ह. श्री. साने/डॉ. आनंद प्रकाश दीक्षित

१५. प्रेमचंद के उपन्यास में स्त्री—पुरुष संबंध—डॉ. भाऊसाहेब गवली

१६. गोदान : संवेदना और शिल्प—डॉ. चंद्रेश्वर कर्ण

१७. हिंदी के आँचलिक उपन्यास—संपादक डॉ. रामदरश मिश्र

१८. हिंदी के आँचलिक उपन्यास : सामाजिक एवं सांस्कृतिक संदर्भ—दिपशंकर नागर

१९. स्वातंत्र्योत्तर आँचलिक उपन्यास—सुभाषिणी शर्मा

२०. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास का शिल्प विकास—डॉ. राधेश्याम कौशिक

२१. श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों का शिल्प विधान—डॉ. पी.व्ही, कोटमे

२२. साठोत्तरी उपन्यास—डॉ. पारूकांत देसाई

२३. साठोत्तर हिंदी उपन्यास : विविध प्रयोग—डॉ. कुसुम शर्मा

२४. साठोत्तर उपन्यास में राजनीतिक चेतना—कृष्णकुमार बिरला

२५. समकालीन हिंदी उपन्यास—रामविनोद सिंह

२६. आधुनिक उपन्यास : विविध आयाम—विवेकी राय

२७. आधुनिक हिंदी उपन्यास : सृजन और आलोचना—डॉ. चंद्रकांत बांदिवड़ेकर

२८. हिंदी के श्रेष्ठ उपन्यास और उपन्यासकार—डॉ. द्वारिकाप्रसाद सक्सेना

२९. बीसबीं शताब्दी के चर्चित उपन्यास—डॉ. राजेंद्र मिश्र

३०. बीसवीं सदी के अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासों का प्रवृत्तिमूलक अनुशीलन—डॉ. क्षितिज धुमाळ

३१. मैला आँचल : शिल्प और दृष्टि—बदरीप्रसाद

३२. मैला आँचल की रचना प्रक्रिया—देवेश ठाकुर

३३. रचनाकार रेणु के साहित्य में वर्णसंघर्ष एवं वर्ग संघर्ष—डॉ. अशोक धुलधुले

३४. रचनाकार रेणु—डॉ. पुष्पा जतकर

३५. भीष्म साहनी के साहित्य का अनुशीलन—डॉ. सुरेश बाबर

३६. शिवप्रसाद सिंह का उपन्यास साहित्य—डॉ. राजेंद्र खैरनार।

द्वितीय सत्र

प्रश्नपत्र ८ विशेष स्तर : वैकल्पिक

विशेष विधा तथा अन्य

(ख) हिंदी नाटक और रंगमंच

उद्देश्य

१. छात्रों को नाटक स्वरूप और विशेषताओं से परिचित कराना।

२. छात्रों को नाटक के रचनाविधान और रंगमंचीय पक्ष से परिचित कराना।

३. छात्रों को हिंदी नाटक और रंगमंच की परंपरा की जानकारी देना।

४. छात्रों में नाटक के आस्वादन और समीक्षा की दृष्टि विकसित करना।

५. छात्रों में भारतीय तथा विदेशी भाषाओं के नाटक पठन के प्रति रुचि बढ़ाना।

अध्यापन पद्धति

१. व्याख्यान तथा विश्लेषण।

२. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा।

३. दृक्–श्राव्य साधनों और माध्यमों का प्रयोग।

४. अतिथि विद्वानों के व्याख्यान।

अध्ययनार्थ विषय

१. नाटक का स्वरूप : नाटक की परिभाषएँ एवं विशेषताएँ।

२. भारतीय एवं पाश्चात्य नाट्य–दृष्टि, अन्य विधाओं से तुलना।

३. हिंदी नाटक और रंगमंच का विकासक्रम।

४. भारतेंदुयुगीन हिंदी नाटक : नाटककार, सामान्य प्रवृत्तियाँ, रंगमंच का परिचय, पारसी रंगमंच का स्वरूप एवं परंपरा।

५. प्रसादयुगीन हिंदी नाटक : प्रमुख नाटक और नाटककार, सामान्य प्रवृत्तियाँ, रंगमंच का परिचय।

६. प्रसादोत्तर हिंदी नाटक : प्रमुख नाटक और नाटककार, सामान्य प्रवृत्तियाँ, रंगमंच का परिचय।

७. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटक क) १९६० तक : प्रमुख नाटक, नाटककार, सामान्य प्रवृत्तियाँ, रंगमंच का परिचय।

८. ख) १९६० से अब तक : प्रमुख नाटक, नाटककार, सामान्य प्रवृत्तियाँ, रंगमंच प्रयोगशीलता।

९. हिंदी नाटक और रंगमंच तथा अनुदित नाटक

१०. अनूदित नाटकों की परंपरा का सामान्य परिचय।

११. स्वातंत्र्योत्तर काल के प्रमुख अनूदित और मंचीय नाटकों का सामान्य परिचय।

१२. हिंदी नाट्य साहित्य में अनूदित नाटकों का योगदान।

१३. नाटक क संरचना : कथावस्तु, चरित्र—चित्रण, संवाद और भाषा शैली, देशकाल— वातावरण, उद्देश्य, अभिनय।

१४. नाटक का रंगमंचीय पक्ष।

१५. नाटक की सामूहिकता, नाटक का दर्शक/प्रेक्षक

१६. एकांकी : स्वरूप, परिभाषाएँ और तत्व।

स्थूल अध्ययन के लिए नाटक

१) अंधेर नगरी : भारतेंदु हरिश्चंद्र

क) नाट्यतत्वों के आधार पर विवेचन।

ख) अभिनेयता और मंचीयता।

ग) प्रासंगिकता।

२) कोणार्क : जगदीशचंद्र माथुर

क) ऐतिहासिकता और काल्पनिकता।

ख) नाट्यतत्वों के आधार पर विवेचन।

ग) अभिनेयता और मंचीयता।

घ) प्रासंगिकता।

च) प्रयोगशीलता।

३) एक सत्य हरिश्चंद्र : डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल

क) कथ्य, शिल्प, चरित्रसृष्टि, भाषा और संवाद योजना।

ख) अभिनेयता और मंचीयता।

संदर्भ ग्रंथ सूची

१. नई रंग—चेतना और हिंदी नाटककार— डॉ. जयदेव तनेजा

२. नाटक की साहित्यिक संरचना—गोविंद चातक

३. नाटककार जगदीशचंद्र माथुर—डॉ. गोविंद चातक

४. नाट्यकला—रघुवंश

५. भारतेंदु के नाटकों की शिल्पविधि—डॉ. शांति मलिक

६. रंगमंच—कुँवरजी अग्रवाल

७. समसामयिक नाटकों में खंडित व्यक्तित्व का अंकन—डॉ. टी.आर. पाटील

८. रंगदर्शन—नेमिचंद्र जैन

९. रंगमंच और नाटक की भूमिका लक्ष्मीनारायण लाल

१०. आधुनिक भारतीय रंग परिदृश्य —डॉ. जयदेव तनेजा

११. आधुनिक हिंदी नाटक और रंगमंच—नेमिचंद्र जैन

१२. कृतिकार लक्ष्मीनारायण लाल—संपा. डॉ. रघुवंश

१३. हिंदी एकांकी शिल्पविधि का विकास—डॉ. सिद्धनाथ कुमार

१४. हिंदी नाटक—बच्चनसिंह

१५. आधुनिक हिंदी नाटक और रंगमंच—नेमिचंद्र जैन

१६. बीसवीं शताब्दी का हिंदी नाटक और रंगमंच—डॉ. गिरीश रस्तोगी

१७. हिंदी नाटक आज तक — डॉ. वीणा गौतम

१८. हिंदी नाट्य साहित्य और रंगमंच की मीमांसा—कुँवर चंद्रप्रकाश सिंह

१९. हिंदी नाट्यसिद्धांत और विवेचन—डॉ. गिरीश रस्तोगी

२०. हिंदी नाटक : प्रगति और प्रभाव—डॉ. दशरथ ओझा

२१. हिंदी नाटक : उद्भव और विकास—डॉ. दशरथ ओझा

२२. हिंदी नाटक—बच्चन सिंह

२३. भारतीय नाट्यशास्त्र और रंगमंच—डॉ. रामसागर त्रिपाठी

२४. पारसी थिएटर : उद्भव और विकास—सोमनाथ

२५. रंगकर्म और मीडिया—डॉ. जयदेव तनेजा
२६. रंगमंच कला और दृष्टि— डॉ. गोविंद चातक
२७. रंगमंच : नया परिदृश्य—रीतारानी पालीवाल
२८. रंगमंच और स्वतंत्रता का आंदोलन—वियज पंडित
२९. रंगदर्शन—नेमीचंद्र जैन
३०. संपूर्ण रंगनाट्य— डॉ. गोविंद चातक
३१. समकालीन हिंदी नाटक और रंगमंच — डॉ. जयदेव तनेजा।
३२. समकालीन नाट्य विवेचन — डॉ. माधव सोनटक्के (विकास प्रकाशन, कानपुर)
३३. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी रंगमंच : समस्या और उपलब्धि — डॉ. ओमप्रकाश शर्मा
३४. नई रंग चेतना और हिंदी नाटककार — जयदेव तनेजा
३५. नाट्य की साहित्यिक संरचना — डॉ. गोविंद चातक
३६. नाट्य का रंग विधान — डॉ. विश्वनाथ मिश्र
३७. नाट्य भाषा — डॉ. गोविंद चातक
३८. नाट्यकला — रघुवंश
३९. नाटककार जगदीशचंद्र माथुर — गोविंद चातक
४०. आधुनिक हिंदी नाटक : चरित्र सृष्टि के आयाम — डॉ. लक्ष्मी राय
४१. आधुनिक हिंदी नाटकों में प्रयोगधर्मिता — डॉ. सत्यवती त्रिपाठी
४२. आधुनिक भारतीय रंग परिदृश्य — डॉ. जयदेव तनेजा
४३. आज के हिंदी नाटक — डॉ. जयदेव तनेजा

द्वितीय सत्र

प्रश्नपत्र ८ : विशेष स्तर : वैकल्पिक

विशेष विधा तथा अन्य

(ग) प्रयोजनमूलक हिंदी

उद्‌देश्य

१. छात्रों को हिंदी भाषा की प्रमुख प्रयुक्तियों और प्रयोजनमूलक शैलियों का परिचय देना।

२. छात्रों को हिंदी में कम्प्यूटर के प्रयोग की विधि से अवगत कराना।

३. छात्रों को विभिन्न क्षेत्रों में हिंदी के कार्यसाधक प्रयोग की कुशलता विकसित करना।

अध्यापन पद्धति

१. व्याख्यान तथा विश्लेषण।

२. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा।

३. दृक्—श्राव्य माध्यमों /साधनों का प्रयोग।

४. राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन के लिए विभिन्न कार्यालयों की अध्ययन यात्रा।

५. विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत अधिकारी विद्वानों के व्याख्यान।

पाठ्‌यक्रम

१) हिंदी भाषा और उसके प्रयोजनमूलक रूप

क) हिंदी भाषा के विविध रूप — सामान्य भाषा, मातृभाषा, माध्यम भाषा, संपर्क भाषा, अंतर्राष्ट्रीय भाषा।

ख) हिंदी के प्रयोजनमूलक भाषा रूप — प्रयोजनमूलक हिंदी : परिभाषा एवं स्वरूप, प्रयोजनमूलक हिंदी की विभिन्न प्रयुक्तियाँ

२) कार्यालयी, वाणिज्य–व्यवसाय की हिंदी

(क) राजभाषा हिंदी : संवैधानिक प्रावधान, ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य।

(ख) कार्यालयी हिंदी : स्वरूप और विशेषताएँ

(ग) कार्यालयी लेखन : स्वरूप, प्रकार, टिप्पण, प्रारूपण, संक्षेपण, पल्लवन, प्रतिवेदन, अभ्यास।

(घ) सरकारी पत्राचार : स्वरूप, प्रकार, प्रारूप – परिपत्र, ज्ञापन, कार्यालय आदेश, अर्धसरकारी पत्र।

(च) व्यावसायिक पत्रलेखन : स्वरूप, प्रकार, प्रारूप – आवेदन पत्र, नियुक्ति पत्र, माँग पत्र, साख पत्र, शिकायती पत्र।

३) मीडिया लेखन

(क) जनसंचार : स्वरूप, महत्व और विभिन्न माध्यमों का परिचय।

(ख) श्रव्य माध्यम–लेखन : स्वरूप और विशेषताएँ, समाचार लेखन, रेडियो नाटक, उद्‌घोषणा, फीचर लेखन, अभ्यास।

(ग) दृक्–श्राव्य माध्यम लेखन : स्वरूप और विशेषताएँ, पटकथा लेखन, टेलिड्रामा, निवेदन, साहित्य विधाओं का रूपांतरण।

(घ) विज्ञापन लेखन : विज्ञापन का स्वरूप और महत्व, भाषिक विशेषताएँ, विज्ञापन लेखन, अभ्यास।

४) कम्प्यूटर–इंटरनेट और हिंदी

(का) कम्प्यूटर : परिचय, रूपरेखा, हार्डवेअर तथा सॉफ्टवेअर का सामान्य परिचय।

(ख) इंटरनेट का सामान्य परिचय।

(ग) हिंदी में उपलब्ध सुविधाओं का परिचय और उपयोग विधि।

(घ) इंटरनेट पोर्टल, डाउन लोडिंग–अपलोडिंग, हिंदी सॉफ्टवेअर पैकेज आदि।

संदर्भ ग्रंथ

१. कम्प्यूटर और हिंदी – डॉ. हरिमोहन (तक्षशिल्प प्रकाशन, ९८–ए, हिंदी पार्क, दरियागंज, नई दिल्ली)

२. कार्यालय हिंदी में प्रयोग की दिशाएँ – संपा. उमा शुक्ल

३. मीडिया लेखन : सिद्धांत और व्यवहार – डॉ. चंद्रप्रकाश

४. मीडिया लेखन – संपा. त्रिपाठी/अग्रवाल

५. मीडिया लेखन – संपा. रमेशचंद्र त्रिपाठी, डॉ. पवन अग्रवाल

६. मीडिया लेखन के सिद्धांत – एन.सी.पंत (तक्षशिल्प प्रकाशन, ९८–ए, हिंदी पार्क, दरियागंज, नई दिल्ली)

७. हिंदी के प्रयोजनमूलक भाषा–रूप – डॉ. माधव सोनटक्के

८. हिंदी में सरकारी कामकाज – रामविनायक सिंह

९. भाषा विज्ञान के सिद्धांत – डॉ. त्रिलोचन पांडेय (तक्षशिल्प प्रकाशन, ९८–ए, हिंदी पार्क, दरियागंज, नई दिल्ली)

१०.भारतीय मीडिया : अंतरंग पहचान – संपा. स्मिता मिश्र

११.पटकथा लेखन : एक परिचय – मनोहर श्याम जोशी

१२.प्रयोजनमूलक कामकाजी हिंदी – कैलाशचंद्र भाटिया (तक्षशिल्प प्रकाशन, ९८–ए, हिंदी पार्क, दरियागंज, नई दिल्ली)

१३.प्रयोजनमूलक हिंदी – डॉ. माधव सोनटक्के

१४.प्रयोजनमूलक हिंदी – डॉ. विनोद गोदरे

१५.प्रयोजनमूलक हिंदी – डॉ. रवींद्रनाथ श्रीवास्तव

१६.प्रयोजनमूलक हिंदी के विविध रूप – डॉ. राजेंद्र मिश्र/राकेश शर्मा (तक्षशिल्प प्रकाशन, ९८–ए, हिंदी पार्क, दरियागंज, नई दिल्ली)

१७.प्रयोजनमूलक हिंदी प्रक्रिया और स्वरूप – डॉ. कैलाशचंद्र भाटिया (तक्षशिल्प प्रकाशन, ९८–ए, हिंदी पार्क, दरियागंज, नई दिल्ली)

१८.प्रयोजनमूलक भाषा और कार्यालयी हिंदी – डॉ. कृश्णकुमार गोस्वामी

१९.प्रयोजनमूलक व्यावहारिक हिंदी – डॉ. ओमप्रकाश सिंहल

२०.प्रशासनिक कामकाजी शब्दावली – डॉ. हरिमोहन (तक्षशिल्प प्रकाशन, ९८–ए, हिंदी पार्क, दरियागंज, नई दिल्ली)
२१.प्रशासनिक हिंदी : टिप्पण, प्रारूपण और पत्र लेखन – डॉ. हरिमोहन (तक्षशिल्प प्रकाशन, ९८–ए, हिंदी पार्क, दरियागंज, नई दिल्ली)
२२.प्रशासन में राजभाषा हिंदी – डॉ. कैलाशचंद्र भाटिया (तक्षशिल्प प्रकाशन, ९८–ए, हिंदी पार्क, दरियागंज, नई दिल्ली)
२३.प्रामाणिक आलेख और टिप्पण – प्रो. विराज
२४.प्रशासनिक और व्यावहारिक पत्रव्यवहार (खंड १ व २) ए. ई. विश्वनाथ अय्यर
२५.प्रेस कॉन्फ्रेंस और भेंटवार्ता – डॉ. नंदकिशोर त्रिखा
२६.राष्ट्रभाषा हिंदी : समस्याएँ और समाधान – डॉ. देवेंद्रनाश शर्मा
२७.राजभाषा के संदर्भ में हिंदी आंदोलनों का इतिहास – उदयनारायण दुबे
२८.राजभाषा हिंदी – डॉ. कैलाशचंद्र भाटिया
२९.राजभाषा के संदर्भ में हिंदी आंदोलन का इतिहास – उदय नारायण दुबे
३०.राजभाषा हिंदी – डॉ. भोलानाथ तिवारी
३१.राजभाषा हिंदी की कहानी – डॉ. रामबाबू षर्मा
३२.संघीय राजभाषा के संदर्भ में पारिभाशिक/वैज्ञानिक षब्दावली के निर्माण की समस्याएँ – बलराजसिंह सिरोही
३३.संपादन कला एवं प्रूफ पठन – डॉ. हरिमोहन (तक्षशिल्प प्रकाशन, ९८–ए, हिंदी पार्क, दरियागंज, नई दिल्ली)
३४.संवाद और संवाददाता – डॉ. राजेंद्र
३५.समाचार, फीचर लेखन तथा संपादन कला – डॉ. हरिमोहन
३६.सरकारी कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग – डॉ. गोपीनाथ श्रीवास्तव
३७.साक्षात्कार – श्याम मनोहर जोशी
३८.सूचना, प्रौद्योगिकी और जनमाध्यम – प्रो. हरिमोहन
३९.उत्तर आधुनिक मीडिया तकनीक – हर्शदेव

४०.दृक–श्राव्य माध्यम लेखन – डॉ. राजेंद्र मिश्र/ईशिता मिश्र (तक्षशिल्प प्रकाशन, ९८–ए, हिंदी पार्क, दरियागंज, नई दिल्ली)
४१.देवनागरी में यांत्रिक सुविधाएँ – राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, नई दिल्ली.
४२.दूरदर्शन : हिंदी के प्रयोजनमूलक विविध प्रयोग – डॉ. कृष्णकुमार रत्तू
४३.दूरदर्शन : दशा और दिशा – सुधीर पचौरी
४४.व्यावहारिक हिंदी – डॉ. कैलाशचंद्र भाटिया (तक्षशिल्प प्रकाशन, ९८–ए, हिंदी पार्क, दरियागंज, नई दिल्ली)
४५.व्यावसायिक संप्रेषण – अनूपचंद भायाणी
४६.जनमाध्यम और मास कल्चर – जगदीश्वर चतुर्वेदी
४७.जनसंचार और विकास – श्यामाचरण दुबे
४८.आकाशवाणी – रासबिहारी विश्वकर्मा

द्वितीय सत्र

प्रश्नपत्र ८: विशेष स्तर (वैकल्पिक)

विशेष विधा तथा अन्य

(घ) हिंदी दलित विमर्श एवं साहित्य

उद्देश्य

१. छात्रों को दलित विमर्श एवं साहित्य का परिचय कराना।

२. छात्रों को दलित साहित्य की वैचारिक पृष्ठभूमि से परिचित कराना।

३. छात्रों को दलित साहित्य के सौंदर्यशास्त्र परिचित कराना।

४. छात्रों को हिंदी साहित्य में दलित साहित्य के योगदान से परिचित कराना।

अध्यापन पद्धति

१. व्याख्यान तथा विश्लेषण।

२. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा।

३. दृक्–श्राव्य माध्यमों/साधनों का प्रयोग।

४. परिचर्चा।

५. अतिथि विद्यानों के व्याख्यान।

अध्ययनार्थ विषय

१. दलित साहित्य : अवधारणा और स्वरूप।

२. दलित साहित्य : उद्भव परंपरा और विकास

३. दलित साहित्य : प्रेरणास्रोत और प्रभाव।

क) कबीर

ख) संत रैदास

ग) महात्मा ज्योतिराव फुले

घ) कार्ल मार्क्स

च) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर

४. परंपरागत साहित्य और दलित साहित्य : साम्य–भेद।

५. दलित साहित्य की विशेषताएँ।

६. दलित साहित्य का कलापक्ष।

७. दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र।

अध्ययनार्थ पाठ्यपुस्तकें :

१. दोहरा अभिशाप—कौसल्या बैसंगी

२. पहला खत — डॉ. धर्मवीर

३. आवाजें—मोहनदास नैमिषराय

४. घुसपैठिए—ओमप्रकाश वाल्मीकि

५. असीम है आसमाँ—डॉ. नरेंद्र जाधव,

अनुवाद —कमलाकर सोनटक्के, अजय ब्रह्मात्मज

संदर्भ ग्रंथ सूची

१. भारतीय दलित साहित्य : परिप्रेक्ष्य—संपात्र पुन्नीसिंह, कमला प्रसाद, राजेंद्र शर्मा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,

२. दलित साहित्य : साहित्यिक और सांस्कृतिक निबंध—डॉ. रामप्रसाद मिश्र, आधुनिक प्रकाशन, ४ बी/६. पुरी गली नं. १. गुरूद्‌वारा, मौजपुर, दिल्ली—५३

३. अस्पृश्यता एवं दलित चेतना, पब्लिशर्स, व्यास बिल्डिंग, एस.एम.एस. हाइवे, जयपुर—०३

४. भारतीय साहित्य में दलित एवं स्त्री—समनलाल, सारांश प्रकाशन प्रा. लि., १४२ ई, पॉकेट ४, मयुर विहार, दिल्ली— ०१

५. चिंतन की परंपरा और दलित साहित्य—डॉ. श्यामौर सिंह बेचैन, डॉ. देवेंद्र चौबे, नवलेखन प्रकाशन, मेनरोड, हजारीबाग, ८२५३०१.

६. दलित साहित्य : रचना और विचार—डॉ. पुरुषत्तम सत्यप्रेमी, अंतिम प्रकाशन, पाकर एक १९, बी.डी.डी.ए. फ्लैट्स, जी ८ एरिया, हरिनगर, दिल्ली—३४.

७. दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र—ओमप्रकाश वाल्मीकि, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली.

८. दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र—शरणकुमार लिंबाले, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली.

९. दलित चेतना : साहित्यिक एवं सामाजिक सरोकार—रमणिय गुप्त, समीक्षा पब्लिकेशन्स, दिल्ली.

१०. साहित्य में दलित—पीड़ित तथा शोषितों का चित्रण—डाह्याभाई रोहित, शांति प्रकाशन, रोहतक (हरियाणा)

११. मराठी दलित साहित्य : आत्मकथा के मीलस्तंभ—गुलाबराव हाड़े, जयभारती प्रकाशन, हलाहाबाद

१२. उत्तर शती का हिंदी साहित्य— डॉ. सुरेशकुमार जैन, अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर